कृषि विज्ञान केन्द्र
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर
अक्टूबर 2025, अंक 18

कृषि विस्तार सेवाओं के तहत डिप्लोमा कोर्स का समापन समारोह

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर सभागार में दिनांक 1 सितम्बर 2025 को कृषि आदान विक्रेताओं के लिए कृषि विस्तार सेवाओं के तहत एक वर्षीय (DAESI) डिप्लोमा कोर्स का समापन समारोह आयोजित किया गया । यह समारोह गांधी विद्या मंदिर के माननीय अध्यक्ष श्री हिमांशु दुगड की अध्यक्षता में आयोजित किया गया , जिसमें बतौर मुख्य अतिथि संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार डॉ. राजकुमार कुल्हरी तथा विशिष्ठ अतिथि सहायक निदेशक डॉ. कुलदीप शर्मा उपस्थित रहे । कार्यक्रम का संचालन फैसिलिटेटर श्री रामेश्वर सहारण द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डिप्लोमा पूर्ण करने वाले अभ्यर्थियों को राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन संस्थान हैदराबाद (मैनेज) की तरफ से जारी प्रमाण पत्र व मेडल देकर सम्मानित किया गया । इस मौके पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों को क्रमशः स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक भी प्रदान किये । कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी.के.सैनी ने अभ्यर्थियों को कोर्स के दौरान प्रदान किए गये तकनीकी ज्ञान एवं अनुभव का प्रयोग करके किसानों की आय में वृद्वि करने हेतु उचित समाधान एवं परामर्श देने हेतु प्रेरित किया । पाठयक्रम के फैसिलिटेटर श्री रामेश्वरलाल सहारण ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की । कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान् हिमांशु दूगड ने सभी अभ्यर्थियों से अपने कार्यक्षैत्र में कुशलता एवं ईमानदारी से कर्तव्यों का पालन करते हुए किसान हित में हमेशा प्रयासरत रहने हेतु आह्वान किया ।

मूंगफली फसल में समन्वित कीट प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर द्वारा दिनांक 5 सितम्बर 2025 को ग्राम गेडाप तहसील सुजानगढ में ''मूंगफली फसल में समन्वित कीट प्रबंधन (Integrated Pest Management-IPM) '' विषय पर एक दिवसीय असंस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मूंगफली फसल में कीट नियंत्रण की नवीनतम एवं पर्यावरण –अनुकूल तकनीकों से अवगत कराना था, जिससे कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग को कम किया जा सके एवं टिकाउ खेती को बढावा मिले ।

प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञ श्री मुकेश शर्मा द्वारा मूंगफली फसल में नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख कीट जैसे कि सफेद लट, थ्रिप्स, सफेद मक्खी आदि की पहचान, उनके जीवन चक्र, आर्थिक क्षति स्तर (ETL), जैविक कीट नियंत्रण उपाय, नीम आधारित कीटनाशकों का प्रयोग, फेरोमोन टैप्स, प्रकाश प्रपंच

आदि पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई । इस कार्यक्रम में ग्राम गेडाप एवं आसपास के क्षैत्रों से आए लगभग 21 किसानों ने भाग लिया ।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ''बाजरे में लिक्विड नैनो फर्टिलाईजर का प्रभाव'' विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ''बाजरे में लिक्विड नैनो फर्टिलाईजर का प्रभाव'' विषय पर एक असंस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 5 सितम्बर 2025 को गांव गेडाप में किया गया, जिसमें 30 प्रगतिशील किसानों, महिला कृषकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई । कार्यक्रम का उद्‌देश्य किसानों को नैनो तकनीक पर आधारित उर्वरकों की उपयोगिता, उनकी वैज्ञानिक प्रयोग विधियों एवं पारंपरिक उर्वरकों की तुलना लाभों के बारे में प्रशिक्षित करना था । केन्द्र के विशेषज्ञ श्री हरीश कुमार रछौया ने बताया कि तरल नैनो फर्टिलाईजर, विशेष रूप से नैनो युरिया कम मात्रा में अधिक प्रभावकारी होते हैं । इससे उत्पादन लागत में कमी, मृदा स्वास्थय में सुधार और पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव सुनिश्चित होता है । कार्यक्रम के अंत में अपनी जिज्ञासाएं एवं समस्या साझा की और विशेषज्ञों द्वारा उन्हें व्यावहारिक समाधान सुझाए गये ।

संतुलित उर्वरक जागरूकता शिविर का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र के सभागार कक्ष में दिनांक 10.09.2025 को वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी.के.सैनी की अध्यक्षता में 100 किसानों के साथ नेशनल फर्टीलाईजर लिमिटेड द्वारा एसएसपी (SSP) और टीएसपी (TSP) के उपयोग डीएपी के बदले करते हुए समुचित उर्वरक उपयोग करने हेतु किसानों को जागृत करने के लिए एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया ।

मुख्य अतिथि राज्य प्रबंधक नितिन रंहगडाले (एनएफएल) ने किसानों को उर्वरकों की उपलब्धता, संतुलित उपयोग और भविष्य में होने वाले आपूर्ति के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा आगामी रबी फसलों जैसे–सरसों, गेहूँ, चना में डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट (एसएसपी) उर्वरक का उपयोग करने हेतु संबोधित किया । उन्होनें बताया की डीएपी के स्थान पर तीन बैग एसएसपी, एक युरिया का उपयोग करने पर 23 किलोग्राम नत्रजन 24 किलोग्राम फॉस्फोरस व 16.5 किलोग्राम सल्फर मिलती है, जबकि एक बैग डीएपी से केवल 9 किलोग्राम नत्रजन व 23 किलोग्राम फॉस्फोरस ही फसलों को मिलती है ।

इस दौरान वैज्ञानिक हरीश कुमार राछौया ने बताया कि एसएसपी में सल्फर अतिरिक्त मिलती है, जिससे सरसों में तेल की मात्रा बढती है और उपज भी अधिक मिलती है साथ ही सल्फर से फसल में प्रोटीन विटामिन भी ज्यादा मिलते हैं जो चना फसल के लिए आवश्यक है । वैज्ञानिक पद्वति से खेती करना ही समय की मांग है और एनएफएल किसानों को इस तरह के लिए हर संभव सहयोग देने को तैयार है । एसएसपी का उपयोग करने से लागत में कमी आती है क्योंकि एसएसपी प्रयोग करने से सल्फर पर अलग से किसानों को खर्च नहीं करना पडता है साथ ही एसएसपी उर्वरक आसानी से बाजार में उपलब्ध है । इस मौके पर स्थानीय खाद बीज विक्रेता संगठन के प्रतिनिधि श्री मंजीत चौधरी, कृषक मित्र श्री रामप्रताप जाखड सहित बडी संख्या में समिति व्यवस्थापक एवं सदस्य उपस्थित रहे ।

सब्जियों में सूत्रकृमि प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 20.9.2025 को कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किसानों को सब्जी क फसलों में होने वाले सूत्रकृमि(Nematode) रोगों से बचाव एवं नियंत्रण की जानकारी देने हेतु एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम ग्राम हुडेरा में आयोजित किया गया । कार्यक्रम में क्षैत्र के 30 प्रगतिशील कृषकों एवं महिला कृषकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अजय कुमावत, विषय विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान) ने किसानों को संबांधित करते हुए बताया कि सूत्रकृमि(Nematode) सब्जी फसलों के लिए एक गंभीर छिपा हुआ कीट रोग है, जो मिट्‌टी में रहकर पौधों की जडों पर हमला करता है । ये सूक्ष्मपरजीवी जडों में गांठे (Root Khots) बनाकर पौधों के पोषक तत्वों और जल अवशोषण क क्षमता को बाधित कर देते हैं । परिणामस्वरूप पौधों की वृद्वि रूक जाती है, पतियां पीली पडने लगती है और उपज में 20 से 40 प्रतिशत तक की कमी देखी जाती है ।

कार्यक्रम में किसानों को सुत्रकृमि की पहचान, उसके लक्षण और एकीकृत प्रबंधन (Integrated Nematode Management) के वैज्ञानिक उपायों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी । उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि नियंत्रण के लिए केवल रासायनिक दवाओं पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है बल्कि जैविक एवं यांत्रिक विधियों का समन्वित उपयोग आवश्यक है । उन्होंने रोग मुक्त एवं प्रमाणित बीजों का चयन, फसल चक्र (Crop Rotation) भूमि का सोदर्यसंदीपन (Soil Solarization) जैव–उपचार आदि उपायों को विशेष रूप से अपनाने की सलाह दी ।

कार्यक्रम के अंत में किसानों को प्रायोगिक प्रदर्शन (Demonstration) के माध्यम से सुत्रकृमि से प्रभावित पौधों की जडों का निरीक्षण कराया और स्वस्थ एवं रोग ग्रस्त पौधों के बीच अंतर समझाया ।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

दिनांक 26 सितम्बर, 2025 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू–I की 21 वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक गांधी विद्या मंदिर के सचिव बिग्रेडियर अजयपति त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । उपस्थित कृषि विशेषज्ञों ने चूरू जिले कि विषम परिस्थितियों के अनुरूप कम पानी एवं शुष्क जलवायु हेतु उपयुक्त फसलों कि किस्मों, बीजों, फलों, सब्जियों व पशुओं कि नस्लों के अनुरूप अनुसंधान तथा अनुप्रयोग करने पर विचार मंथन करते हुए अपने अमूल्य सुझाव दिये ।

कृषकों कि आय को बढाने हेतु कृषि लागत को कम करने, कृषि आदानों के प्रभावी उपयोग, उचित भण्डारण एवं बाजार में उत्पादों को अच्छे भाव में बेचने तथा प्राकृतिक खेती को अपनाने हेतु आवश्यक सभी बिन्दुओं पर सलाह देते हुए आगामी वर्ष 2025–26 की कार्य योजना, युवाओं को कृषि व्यवसाय से जोडने के प्रयासों को और अधिक बढाने पर बल दिया ।

आगामी वर्ष में केन्द्र को प्रशिक्षणो, कृषि एवं पशुपालन प्रदर्शनों व्यवसायिक प्रशिक्षणों, स्वरोजगार हेतु दक्षता प्रशिक्षणों को जिला स्तर पर लागू करने हेतु सभी विभागों ने सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया ।

बैठक के मुख्य एजेन्डे के तहत डॉ. वी.के.सैनी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर ने गत वर्ष 2024–25 की केन्द्र की प्रगति प्रतिवेदन का सभी सदस्यो द्वारा अनुमोदन करवाया एवं आगामी वर्ष 2025–26 की कार्य योजना पर गहनता से विचार किया गया । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान केंन्द्र, बीकानेर के निदेशक डॉ. जगदीश राणे ने केन्द्र के कार्यो की प्रशंसा की तथा आगामी वर्ष कि कार्य योजना एवं विकास के लिये अपने सुझाव देते हुए **CIAH** बीकानेर द्वारा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

इस बैठक में भाग लेने वाले प्रमुख सहभागी सहायक निदेशक (कृषि) चूरू श्री कुलदीप शर्मा ने कृषि विज्ञान केन्द्र पर थार शोभा खेजडी पर बडिंग कर कृषकों को उपलब्ध करवाने पर जोर दिया । सहायक निदेशक–कृषि, सुजानगढ ने कृषि क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग एवं बकरी पालन पर किसानों के लिये जागरूकता कार्यक्रम करवाने हेतु बल दिया । डॉ. रामावतार शर्मा, कृषि अधिकारी, चूरू ने क्षेत्र में फल एवं सब्जी के उत्पादन बढाने पर जोर दिया । इसके अलावा अन्य विभागों से पधारे वरिष्ठ पशु चिकित्सक डॉ. प्रवीण शर्मा, श्री जगदीश अधिशाषी अभियंता–जलग्रहण विभाग, सरदारशहर, डॉ. विवेक सारण–पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ, श्री जी.एल.निवार्ण–एजीएम–नाबार्ड, चूरू, श्रीमति करूणा गौड–प्रतिनिधि एम.डी–सरस डेयरी, सरदारशहर, किसान प्रतिनिधि श्री गोपीचंद जागिड–कामासर एवं महिला कृषक प्रतिनिधि श्रीमति गीतादेवी–पुलासर तथा श्रीमती रूकमणी देवी–बरलाजसर ने भी अपने विचार सांझा किये । बैठक की समाप्ति पर डॉ. वी.के.सैनी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख–केवीके ने बैठक में पधारे सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया । इनके अलावा बैठक में केन्द्र के श्री मुकेश शर्मा, श्री हरीश राछौया, श्री श्याम बिहारी व्यास, श्री अजय कुमावत आदि उपस्थित रहे ।

इस बैठक की विशेष उपलब्धि ये रही कि सभी विभागों के अधिकारियों ने इस बात पर गहराई से विचार किया कि किस प्रकार जिले के किसानों व गांवों के विकास के लिये सभी विभाग आपसी समन्वय से कृषि विज्ञान केन्द्र के साथ मिलकर कृषि, बागवानी, पशुपालन, स्वरोजगार एवं महिला उत्थान के कार्यो को करते हुए किसानों को आत्म निर्भर बनाया जा सके ।

लनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री मुकेश शर्मा (पौध संरक्षण विशेषज्ञ) श्री हरीशकुमार रछौया (फसल उत्पादन विशेषज्ञ) श्री श्याम बिहारी (पशुपालन विशेषज्ञ) श्री अजय कुमावत (बागवानी विशेषज्ञ) श्री कानाराम सोढ (फार्म मैनेजर) **श्री रमेश चौधरी (वरिष्ठ अनुसन्धान अध्येता-NICRA)**	डॉ. रमन जोधा (विषय वस्तु विशेषज्ञ गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी.वी.,स्टैनो Typed श्री ओ.पी.शर्मा, टाइपिस्ट	डॉ. वी. के. सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर,चूरू–I